ग्लेडियोलस की बागवानी

अभिनव कुमार
सहायक प्राध्यापक, उद्यान विज्ञान विभाग, भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान

विश्व का एक प्रमुख कट फ्लावर है। ग्लेडियोलस को उसकी सुंदर एवं आकर्षक बाली एवं उस पर लगे पुष्पों के लिए बहुत ही पसंद किया जाता है। ये छोटे फूल बाली पर क्रम से एवं धीरे-धीरे खिलते हैं जिससे कटे हुए फूलों को ज्यादा समय तक रख सकते है। ग्लेडियोलस विभिन्न रंगों में पाये जाते हैं। यथा एक या दोहरे रंग के, बीच में धब्बे या धब्बे रहित, सफेद गुलाबी से लेकर गहरे लाल रंगों में मिलते हैं। ग्लेडियोलस की बाली को मुख्यतः बगीचों में आंतरिक सजावट के लिए एवं गुलदस्ते बनाने के लिए इस्तेमाल करते है। ग्लेडियोलस का वैज्ञानिक नाम ग्लेडयोलस ग्रैंडिफ्लोरस तथा कुल इरीडेसी है एवं इसका उत्पति स्थान अफ्रीका है। भारत में इसकी खेती अंग्रेजों द्वारा 16-17 शताब्दी में शुरू की गई थी।

जलवायु

इसकी खेती सफलतापूर्वक विभिन्न मौसमों में की जा सकती है एवं पौधा को इस प्रकार लगाया जाता है कि इसे हमेशा अनुकूल मौसम प्राप्त हो जिससे कि हमें फूल, कंद एवं कंन्दिकाएं लगातार मिलती रहें। इसको न्यूनतम तापमान 160 सें.ग्रे. तथा अधिकतम तापमान 250 सें.ग्रे. के बीच लगाया जता है। फूल खिलने समय वर्षा नहीं होनी चाहिए।

मिट्टी

ग्लेडियोलस की सफलता पूर्वक खेती करने के लिए हल्की एवं उचित पानी की निकासी वाली मिट्टी अच्छी होती है। भारी मिट्टी में जैविक खाद एवं बालू मिलाने पर ग्लेडियोलस की अच्छी पैदावार होगी। मिट्टी का पी.एच. मान अगर 6.5 हो तो उत्तम होगा। अंतिम रूप से खेत तैयार करने वक्त प्रति वर्ग मीटर 5 से 6 किलो गोबर की सड़ी हुई खाद या पत्ती की खाद एवं 60 ग्राम हड्डी चूर्ण या सिंगल सुपर फॉस्फेत खेत में देनी चाहिए। बहुत ज्यादा खाद देने पर बाली लम्बे एवं पतले हो जाएँगे।

ग्लेडियोलस की प्रजातियाँ एवं प्रकार

ग्लेडियोलस मुख्य रूप से दो प्रकार का होता है: पहला जिसमें बड़े फूल होते हैं तथा दूसरा वटरफ्लाई एवं मिनिएचर है। इन दोनों प्रकारों में अगेती, मध्यम एवं पिछेती किस्मों के फूल होते हैं। बटरफ्लाई में बालियाँ छोटी होती हैं एवं विभिन्न रंगों में मिलती हैं। कभी-कभी गहरे रंगों वाली भी होती हैं जो कि बहुत सुंदर दिखती हैं। यह छोटे बगीचों एवं क्यारियों के लिए अत्यंत उपयुक्त है। ग्लेडियोलस की एक अन्य प्रजाति प्रिमुलिनस है। इसमें ऊपर की पंखुड़ियाँ मुड़ी हुई होती हैं, जो देख में सुंदर लगती हैं।

ग्लेडियोलस की कुछ नई किस्में विकसित की गई हैं जिनमें प्रमुख हैं अर्चना, अरुण, ज्वाला, मनोहर, मनीषा, मनमोहन, मोहिनी, मुक्ता, संयुक्ता, त्रिलोकी, फ्रेंडशिप, सपना, नजराना, पूनम, चेरी ब्लासम, मीरा, शोभा, कुमकुम, आरती, स्नोप्रिंस, वाटर मेलन पिंक, वाइल्ड रोज, उर्मि, ज्योत्सना, गुलाल, शबनम, उर्वशी इत्यादि।

लगाने का समय

मैदानी क्षेत्रों में कंद लगाने का उत्तम समय सितम्बर एवं अक्टूबर के मध्य है। अगर मौसम ठंडा हो तो इसे अगस्त के मध्य में भी लगाया जा सकता है। जाड़े में फूल प्राप्त करने के लिए इसे अक्टूबर एवं नवम्बर के मध्य में लगाते हैं। उत्तरी भारत के मैदानी क्षेत्रों में अक्टूबर के अंत से अप्रैल तक अच्छी गुणवत्ता वाली बालियाँ प्राप्त करने के लिए कंद लगाने के समय को जुलाई से दिसम्बर तक समायोजित किया जाता है। कंदों को पन्द्रह दिनों के अंतराल पर लगाने से हमें ज्यादा समय तक फूल मिलते हैं।

प्रवर्धन एवं लगाने की विधि

ग्लेडियोलस का प्रर्वधन मुख्यतः कंद द्वारा होता है। इसे बीज द्वारा भी लगा सकते हैं, परन्तु इससे अच्छे गुणों वाले फूल प्राप्त नहीं होते हैं। फिर भी पौधा प्रजनक बीजों का इस्तेमाल पौधों की नयी किस्में निकालने में करते हैं। छोटी कंदिकाओं एवं कंदों को जल्दी से बढ़ाने के लिए 24 घंटे पानी में भिंगोते हैं। पानी में भिंगोने से पहले उसके ऊपर की शल्कों को सावधानी पूर्वक हटा देते हैं। कंदिकाएं दो-तीन बार लगाने के बाद ही उचित आकार का फूल दे पाती हैं। अच्छे आकार का फूल प्राप्त करने के लिए कार्म का भार 50-50 ग्राम तथा आकार लगभग 4-5 हसंकपसें.मी. होना चाहिए। प्रदर्शनी

हेतु बड़ी बालियों को प्राप्त करने के लिए कार्म की लंबाई क्रमशः 7.5 से 10 सें.मी. व्यास होनी चाहिए। एक मध्यम आकार का नुकीला कार्म ज्यादा अच्छा होता है वनिस्पत कि चपटे आकार के बड़े कार्म के अंकुरित होने के बाद इसे गमलों या क्यारियों में लगा देते हैं। कार्म को 15–20 सें.मी. की दूरी पर लगाना चाहिए तथा प्रत्येक कतार के बीच 30–45 सें.मी. की दूरी रखनी चाहिए। कतार के बीच में दूरी रखने से अन्य कर्षण क्रियाएं करने में सुविधा होती है। कार्म को 5 सें.मी. मिट्टी के नीचे दबाया जाता है।

खाद एवं पानी

ग्लेडियोलस में बहुत ज्यादा खाद देना अच्छा नहीं होता है। इसमें सड़े हुए गोबर की खाद, पत्ती खाद या कम्पोस्ट डालना सबसे अच्छा होता है। प्रति हेक्टेयर 20–30 टन गोबर की सड़ी खाद, 75 किलो नाइट्रोजन (163 किलो यूरिया), 100 किलो फास्फोरस (625 किलो सिंगल सुपर फास्फेट) तथा 140 किलो पोटाश (233 किलो म्युरियेट ऑफ पोटाश) का व्यवहार करना चाहिए। एक महीने बाद फिर मिट्टी चढ़ाने समय 75 किलो नाइट्रोजन प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करना चाहिए।

डंडे लगाना

जब बालियाँ निकलने लगें तो उसे बाँस की डंडियों की सहायता से बाँध देने से वे तेज हवा में नहीं गिरती हैं। अगर पौधे बहुत नजदीक में या झुंड में लगे हों तो डंडे की जरूरत नहीं पड़ती है। मिनिएचर एवं बटरफ्लाई में डंडे लगाने की जरूरत नहीं पड़ती है। जब पौधे 25–30 सें.मी. लंबाई की हो जाएं तब उन पर मिट्टी चढ़ाएँ।

खरपतवार निकालना

समय–समय पर खरपतवार निकालते रहना चाहिए। पूरी फसल अवधि में चार–पाँच बार खरपतवार निकालने की जरूरत पड़ती है। पौधे लगाने के पहले प्रति हेक्टेयर 2.5 लीटर बेसलीन 500–700 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने से मिट्टी खरपतवार से लग. भग 70 दिनों तक मुक्त रहती है।

फसल काटना एवं संग्रहण

समयानुसार बोआई करने पर किस्मों के हिसाब से ग्लेडियोलस के कंदों को लगाने के दो से ढाई महीनों बाद फूल निकलने लगते हैं। कार्म एवं कार्मेल बालियों के काटने के 6–8 हफ्ते बाद उखाड़ने के योग्य हो जाते हैं। कार्म निकालने के 2–3 सप्ताह पहले सिंचाई बंद कर दी जाती है। फूल खिलने के बाद जब पत्तियाँ पीली पड़ने लगें तब पौधों को सतह से 15 सें.मी. ऊपर मरोड़कर झुका देते हैं, जिससे कार्मेल अच्छी तरह से परिपक्व हो जाएगा। कंदों को मिट्टी से निकालने का कार्य मार्च–अप्रैल में होता है। मिट्टी से निकालने के बाद कार्म को पत्तियों सहित छाये में एक हफ्ते के लिए छोड़ देते हैं।

बीमारियाँ एवं कीड़े

विल्ट या कॉलर रॉट–

यह एक मुर्झा रोग है जो फफूंद द्वारा फैलता है। इसमें पत्तियाँ हांसिए के आकार की हो जाती हैं। पत्तियाँ पीली हो जाती हैं एवं लाल भूरे धब्बे किनारे पर दिखने लगते हैं। अतः कार्म लगाने के पहले विवि स्टीन दवा एक 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में बने घोल में 30 मिनट तक उपचारित करें। एक ही खेत में 2–3 बार से ज्यादा ग्लेडियोलस न लगायें। कार्मेल से बढाये हुए कॉर्म का ही इस्तेमाल करें।

संग्रह में सड़ना

यह भी फफूंद एवं उसकी प्रजातियों द्वारा फैलता है। इसके कारण कॉर्म की सतह काली पड़ जाती है एवं बहुत सड़ी हुई गंध आती है। इसकी रोकथाम हेतु कंदों को संग्रहण करने के पूर्व विविस्टीन 2 ग्रामथ्ली. पानी में घोलकर कंद को उपचारित करते हैं।

कीड़े एवं रोकथाम

कैटर पिलर–

यह कीट पत्तियों को खाता है। इसकी रोकथाम के लिए क्युनालफॉस 25 ई.सी. दवा का 2 मि.ली. ली. पानी में घोल बना कर छिड़काव करना चाहिए।

माइट–

यह कीट पौधे का रस चूस कर नुकसान पहुँचाता है, जिससे पौधे पर भूरे रंग का दाग होकर पत्तियाँ झड़ने लगती हैं। इसकी रोकथाम के लिए डायकोफॉल दवा का 2.5 मि.ली. ली. पानी में घोक बना कर छिड़काव करना चाहिए।